

## टी.सी.एस. कंपनी की शोधन क्षमता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रो. (डॉ.) एस.के. खटीक\*  
नारायण जामोद\*\*

### प्रस्तावना

शोधन क्षमता का आशय भुगतान करने की क्षमता से है। एक फर्म अथवा कंपनी द्वारा विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों से ऋण लिया जाता है, ये ऋण सामान्यतः 3 प्रकार के होते हैं:—1. अल्पकालीन ऋण 2. मध्यकालीन ऋण 3. दीर्घकालीन ऋण। कंपनी द्वारा इन ऋणों का उपयोग व्यवसाय की आवश्यकतानुसार किया जाता है। ये सभी ऋण बाहरी व्यक्तियों द्वारा प्रदान किया जाता है, जिसे बाहरी दायित्व या बाहरी लेनदार कहते हैं। कंपनी के हितधारक यह भी चाहते हैं कि इनके द्वारा दिया गया ऋण सुरक्षित होना चाहिए, अन्यथा जोखिम की संभावना अधिक होती है, हितधारक कंपनी को उपरोक्त समस्त प्रकार के ऋण प्रदान करती हैं, परन्तु वह इन ऋणों की सुरक्षा भी चाहती है। बाहरी दायित्व के अंतर्गत विभिन्न शोधार्थियों एवं लेखकों द्वारा 2 प्रकार के ऋणों को शामिल किया गया है, अल्पकालीन ऋण एवं दीर्घकालीन ऋण हितधारकों द्वारा दिया गया ऋण तभी सुरक्षित हो सकता है, जब कंपनी की ऋण चुकाने की क्षमता अच्छी हो अतः कंपनी द्वारा लिये गये अल्पकालीन ऋण एवं दीर्घकालीन ऋण को भुगतान करने की क्षमता ही शोधन क्षमता कहलाती है। विभिन्न लेनदारों, बैंकों एवं विनियोगकर्ताओं द्वारा ऋण देने से पूर्व कंपनी की शोधन क्षमता का अध्ययन आवश्यक है, यदि कंपनी की शोधन क्षमता है अर्थात् ऋण चुकाने में समर्थ है, तो ऐसी स्थिति में जोखिम की मात्रा भी बहुत कम हो जाती है, परन्तु कंपनी की शोधन क्षमता अच्छी नहीं है, तो ऐसी स्थिति में जोखिम की मात्रा अधिक बढ़ जाती है, इसलिये कंपनी के हितधारकों या लेनदारों, विनियोगकर्ताओं एवं बैंकों को कंपनी की शोधन क्षमता का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। अल्पकालीन शोधन क्षमता एवं दीर्घकालीन शोधन क्षमता के अध्ययन हेतु विभिन्न अनुपातों के माध्यम से किया जाता है, जो कि कंपनी की शोधन क्षमता का अध्ययन करते हैं, मुख्यतः चालू अनुपात, तरल अनुपात, पूर्ण तरलता अनुपात। ये सभी अनुपात अल्पकालीन शोधन क्षमता का अध्ययन करते हैं, इसी प्रकार ऋण क्षमता अनुपात, शोधन क्षमता अनुपात, स्वामित्व अनुपात, इण्टरेस्ट कवरेज अनुपात, विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय। ये सभी अनुपात दीर्घकालीन शोधन क्षमता का अध्ययन करते हैं।

### शोध विषय के अध्ययन का औचित्य

एक कंपनी की साख एवं ख्याति उसकी शोधन क्षमता पर निर्भर करती है, कंपनी का अस्तित्व भी शोधन क्षमता पर निर्भर करता है, यदि कंपनी की शोधन क्षमता अच्छी नहीं है, तो जोखिम की संभावना अधिक हो जाती है तथा बैंकों, लेनदारों, पूर्तिकर्ताओं एवं विनियोगकर्ताओं की जोखिम में वृद्धि होने लगती है एवं ख्याति तथा साख में भी कमी होने लगती है, जिससे कंपनी के ऋणों के डूबने की संभावना अधिक हो जाती है, इसी प्रकार यदि कंपनी की शोधन क्षमता अच्छी है, तो जोखिम की संभावना कम होने लगती है एवं ख्याति एवं साख में भी वृद्धि होने लगती है, जिससे कंपनी के ऋण डूबने की संभावना कम हो जाती है इस शोध अध्ययन में यह जानने की कोशिश की गयी है कि कंपनी की शोधन क्षमता किस प्रकार की है जिससे कंपनी के ऋणों की जोखिम एवं सुरक्षा करती है। शोधन क्षमता ठीक न होने से व्यवसाय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा कंपनी समापन की ओर अग्रसर होने लगती है, लेकिन शोधन क्षमता अच्छी होने पर कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव

\* प्राध्यापक एवं पूर्व संकायाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।

\*\* सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।

डालती हैं, जो कि कंपनी की साख एवं ख्याति में वृद्धि होने लगती हैं, तथा जोखिम में कमी आने लगती हैं, इसीलिए इस शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि टी.सी.एस. कंपनी जो कि आई. टी. क्षेत्र की कंपनी है, जिसका शोधन क्षमता का अध्ययन किया जा रहा है, कि इस कंपनी में ऋणों की सुरक्षा एवं जोखिम कितनी हैं, इस हेतु विभिन्न अनुपात की सहायता ली जा रही है यह अध्ययन लेनदारों, विनियोगकर्ताओं, पूर्तिकर्ताओं एवं समाज के लिए उपयोगी है, इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध विषय का अध्ययन आवश्यक है।

### शोध साहित्य का पुर्नावलोकन

कई शोधकर्ताओं ने विभिन्न दृष्टिकोण और विभिन्न परिस्थितियों में शोधन क्षमता का अध्ययन किया है, जिसका विश्लेषण इस प्रकार है:-

**चेरियर प्रवीण (2001)** द्वारा डी./ई./एन. कनेक्टर लि., कोचिन के वित्तीय वि. लेशण पर एक अध्ययन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान दायित्व को पूरा करने के लिए कंपनी की क्षमता और संपत्ति का उपयोग की क्षमता का विश्लेषण करना है तथा कंपनी की क्षमता एवं समग्र प्रदर्शन का अध्ययन करना है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि कार्यशील पूँजी के टर्नओवर अनुपात में पिछले एक वर्ष से लगातार वृद्धि हो रही है यह कार्यशील पूँजी के कुशल प्रबंधन को दर्शाता है तथा कुल ऋण अनुपात का कम होना यह दर्शाता है कि कंपनी बाहरी दायित्व पर कम निर्भर है।

**राजमणि आर. (2012)** द्वारा "समूह कंपनियों का वित्तीय प्रदर्शन का मूल्यांकन पर अध्ययन किया गया। लक्ष्मी समूह कोयम्बटूर के एक केस अध्ययन में निष्कर्ष निकला है कि कुछ कमियों को छोड़कर समूह वित्तीय क्षमता को बनाये रखने में कुशल रहा है, जिससे कि समूह अपने व्यवसाय का वर्गीकरण एवं विस्तार कर सकें।

**शानमुगम एम.आर.(2012)** ने "तामिलनाडु की कताई मिलों की चयनित इकाइयों का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य में मिलों की तरलता और गतिविधि प्रबंध का अध्ययन करना तथा दीर्घकालीन शोधन क्षमता तथा मिलों के वित्तीय प्रदर्शन का अध्ययन किया। विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष बाहर आये:- अन्ना एवं धर्मपुरी मिलों के स्कन्ध में क्रमशः 13.72 प्रतिशत एवं 62.75 प्रतिशत की वृद्धि हुई। दूसरी ओर भारती मिल में सूती धागे के स्कन्ध में 46.28 प्रतिशत की कमी आयी तथा 3 मिलों की नकद की स्थिति धीरे-धीरे कम हो रही थी।

**हालानी (2014)** ने भारत में कुछ चुनिंदा पेपर कंपनियों में कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करने का प्रयास किया। अध्ययन प्रमुख रूप से प्रकाशित लेखों एवं वार्षिक वित्तीय प्रतिवेदन पर आधारित था। अध्ययन से निष्कर्ष निकला है कि आंध्रप्रदेश पेपर मिल, बलारपुर पेपर मिल्स, जे.के. पेपर मिल्स, ओरियण्ट पेपर मिल्स, साउथ पेपर मिल तथा स्टार पेपर मिल में चालू अनुपात की स्थिति संतोषजनक है। इसके साथ ही साथ टी.एन.पी.एल. और वेस्ट कोस्ट पेपर मिल में भी चालू अनुपात संतोषजनक है। यह भी पाया गया कि अध्ययन के लिये जिन कंपनियों का चयन किया गया था उनके चालू अनुपात में भी काफी भिन्नता है।

**कृष्णमूर्ति एम. (2016)** ने कुछ स्टील कंपनी के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि बड़ी एवं मिड केप इस्पात कंपनियों द्वारा संपत्तियों से आय प्राप्त करने में काफी अच्छी हैं, किंतु विसा एवं कल्याणी संपत्तियों पर प्रत्याय में सफल नहीं रही हैं।

**शोध विषय के अध्ययन के उद्देश्य:-** शोध विषय के अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं:-

- टी.सी.एस. कंपनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता का अध्ययन करना।
- टी.सी.एस. कंपनी की दीर्घकालीन शोधन क्षमता का अध्ययन करना।

### परिकल्पना

- कंपनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता में अध्ययन अवधि के दौरान कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कंपनी की दीर्घकालीन शोधन क्षमता में अध्ययन अवधि के दौरान कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

### शोध विषय के अध्ययन की संरचना

इस शोध विषय के अध्ययन में वित्तीय समंको का अध्ययन किया गया है, जिसका मुख्य स्रोत वार्षिक प्रतिवेदन एवं इंटरनेट हैं, इन समंको को अध्ययन की आवश्यकतानुसार वर्गीकरण एवं समूहीकरण किया गया है। इस शोध विषय में ली गई परिकल्पना का भी टी परीक्षण किया गया है।

### सीमाएँ

इस शोध विषय के अध्ययन की सीमाएँ इस प्रकार हैं—

- इस शोध विषय के अध्ययन में द्वितीय समंको का उपयोग किया गया है।
- समंकों का वर्गीकरण एवं समूहीकरण शोध की आवश्यकता के अनुसार किया गया है।
- शोध अध्ययन की अवधि सीमित है।

### टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस की अल्पकालीन शोधन क्षमता का विश्लेषण

**अल्पकालीन शोधन क्षमता:**— अल्पकालीन शोधन क्षमता का आशय एक वर्ष के दौरान जिन ऋणों का चुकाना आवश्यक होता है, वह ऋण अल्पकालीन ऋण कहलाते हैं। अल्पकालीन ऋण सामान्यतः चालू दायित्व के भुगतान करने से हैं, क्योंकि इन दायित्व का भुगतान एक वर्ष के अन्दर करना आवश्यक होता है। ये अल्पकालीन दायित्व कंपनी पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, इसीलिये इन दायित्व का भुगतान के अध्ययन हेतु निम्नलिखित अनुपातों का विश्लेषण किया जा रहा है:—

- **चालू अनुपात:**— चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्व के बीच के अनुपात को चालू अनुपात या कार्यशील पूंजी अनुपात कहते हैं। इसकी गणना विधि इस प्रकार है:—

$$\text{चालू अनुपात} = \frac{\text{चालू सम्पत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

सारणी 1: चालू अनुपात

वर्ष	चालू सम्पत्तियाँ	चालू दायित्व	चालू अनुपात
2015-16	63067.39	21975.51	2.87:1
2016-17	68619	10701	6.41:1
2017-18	81224	17828	4.55:1
2018-19	92131	22084	4.17:1
2019-20	90237	27060	3.33:1

स्रोत:— वार्षिक प्रतिवेदन टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस

निर्वाचन:— वित्तीय वर्ष 2015-16 में कंपनी का चालू अनुपात 2.87:1 था, जो कि वर्ष 2016-17 में 6.41:1 हो गया। वित्तीय वर्ष 2017-18 में इस अनुपात में कमी हो गयी तथा 4.55:1 हो गया। वर्ष 2018-19 में यह अनुपात 4.17:1 हो गया तथा 2019-20 में यह अनुपात 3.33:1 रह गया।

- **तरल अनुपात:**— इसे कभी-कभी तरल अनुपात या नियर मनी अनुपात भी कहते हैं। यह अनुपात चालू अनुपात के परिपूरक रूप में प्रयोग किया जाता है। तरल अनुपात की गणना के लिए कुल तरल सम्पत्तियों को कुल चल दायित्वों से विभाजित कर दिया जाता है। सूत्र के रूप में,

$$\text{तरल अनुपात} = \frac{\text{तरल सम्पत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

### सारणी 2: तरल अनुपात

वर्ष	तरल सम्पत्तियाँ	चालू दायित्व	तरल अनुपात
2015-16	57468.77	21975.51	2.61:1
2016-17	67051	10701	6.26:1
2017-18	78577	17828	4.40:1
2018-19	73333	22084	3.32:1
2019-20	82026	27060	3.03:1

स्रोत:— वार्षिक प्रतिवेदन टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस

**निर्वचन:-** वित्तीय वर्ष 2015-16 में यह अनुपात 2.61:1 है, वर्ष 2016-17 में इस अनुपात में वृद्धि हुई है और 6.26:1 हो गया। वित्तीय वर्ष 2017-18 में इस अनुपात में वर्ष 2016-17 की तुलना में कमी हुई तथा 4.40:1 हो गया। 2018-19 में यह अनुपात 2017-18 की तुलना में कम हो गया और यह अनुपात 3.32:1 हो गया। वित्तीय वर्ष 2019-20 में यह अनुपात वर्ष 2018-19 की तुलना में कम हो गया तथा 3.03:1 हो गया।

- **पूर्ण तरलता अनुपात :-** यह अनुपात पूर्ण तरल सम्पत्तियों एवं चालू दायित्व के बीच सम्बन्ध को दर्शाता है। पूर्ण तरल सम्पत्तियों में रोकड़, बैंक शेष तथा तुरन्त विपणन योग्य प्रतिभूतियों में विनियोग का शामिल किया जाता है। सूत्र इस प्रकार है:-

$$\text{पूर्ण तरलता अनुपात} = \frac{\text{पूर्ण तरल सम्पत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

**सारणी 3: पूर्ण तरलता अनुपात**

वर्ष	रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य सम्पत्तियाँ	चालू दायित्व	त्वरित तरल अनुपात
2015-16	6784.76	21975.51	0.31:1
2016-17	790	10701	0.07:1
2017-18	4883	17828	0.27:1
2018-19	7224	22084	0.33:1
2019-20	8646	27060	0.32:1

स्रोत:- वार्षिक प्रतिवेदन टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस

**निर्वचन:-** वर्ष 2015-16 में यह अनुपात 0.31:1 था जो कि 2016-17 में 0.07:1, 2017-18 में 0.27:1, 2018-19 में 0.33:1 तथा 2019-20 में 0.32:1 हो गया।

**दीर्घकालीन शोधन क्षमता:-** दीर्घकालीन शोधन क्षमता का आशय ऐसे ऋणों से है, जो 5 वर्ष की अवधि के पश्चात् चुकाये जाने वाले ऋणों से हैं, टी.सी.एस. कंपनी की दीर्घकालीन शोधन क्षमता के विश्लेषण हेतु अनुपात विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। दीर्घकालीन शोधन क्षमता कंपनी की ख्याति, अंशों का बाजार मूल्यों तथा विक्रय को प्रभावित करती है, इसीलिये एक कंपनी की दीर्घकालीन शोधन क्षमता हेतु अच्छी होना अनिवार्य है। टी.सी.एस. कंपनी की दीर्घकालीन शोधन क्षमता हेतु निम्नलिखित अनुपात का अध्ययन किया जा रहा है:-

- **ऋण समता अनुपात:-** एक व्यावसायिक संस्था की कुल सम्पत्तियों का अर्थ-प्रबन्धन स्वामी इक्विटी या ब्राह्म ऋणों द्वारा किया जाता होता है। इसका सूत्र इस प्रकार है:-

$$\text{ऋण समता अनुपात} = \frac{\text{ब्राह्म ऋण}}{\text{स्वामी फण्ड}}$$

**सारणी 4: ऋण समता पूँजी अनुपात**

वर्ष	ऋण	समता अंश पूँजी	समता ऋण अनुपात
2015-16	23521.59	65360.56	0.36%1
2016-17	11736	78022	0.15%1
2017-18	20766	85128	0.24%1
2018-19	25044	89446	0.27%1
2019-20	36150	84126	0.42%1

स्रोत:- वार्षिक प्रतिवेदन टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस

**निर्वचन:-** वित्तीय वर्ष 2015-16 में यह अनुपात 0.36:1 है। यह अनुपात वर्ष 2016-17 में बढ़कर 0.15:1 हो गया वर्ष 2017-18 में इस अनुपात में वृद्धि हो गयी तथा 0.24:1 रह गया। इस अनुपात में आंशिक वृद्धि हुई और यह अनुपात 2018-19 में 0.27:1 हो गया। अध्ययन अवधि के अंतिम वर्ष में इस अनुपात में वृद्धि हुई तथा 0.42:1 हो गया।

- **शोधन अनुपात:-** यह अनुपात संस्था की दीर्घकालीन शोधन क्षमता पर प्रकाश डालता है। इसकी गणना विधि इस प्रकार है:-

$$\text{शोधन क्षमता अनुपात} = \frac{\text{कुल सम्पत्तियाँ}}{\text{कुल ब्राह्म दायित्व}}$$

**सारणी 5: शोधन अनुपात**

वर्ष	कुल बाह्य दायित्व	कुल सम्पत्तियाँ	शोधन अनुपात
2015-16	23521.59	89384.38	0.26:1
2016-17	11736	89758	0.13:1
2017-18	20766	106296	0.19:1
2018-19	25044	114943	0.22:1
2019-20	36150	120899	0.30:1

स्त्रोत:- वार्षिक प्रतिवेदन टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस

**निर्वचन:-** वित्तीय वर्ष 2015-16 में यह अनुपात 0.26:1 है, वर्ष 2016-17 में इस अनुपात में कमी हो गयी तथा यह 0.13:1 हो गया। 2017-18 में यह अनुपात 0.19:1 हो गया। यह अनुपात वर्ष 2018-19 में 0.22:1 हो गया। अध्ययन अवधि के अंतिम वर्ष में यह अनुपात 0.30:1 रह गया।

- **स्वामित्व कोष अनुपात:-** इस अनुपात का ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है:-

**स्वामित्व कोष / कुल सम्पत्तियाँ**

**सारणी 6: स्वामित्व कोष अनुपात**

वर्ष	स्वामित्व कोष	कुल सम्पत्तियाँ	अनुपात
2015-16	65360.56	89384.38	0.73:1
2016-17	78022	89758	0.87:1
2017-18	85128	106296	0.80:1
2018-19	89446	114943	0.78:1
2019-20	84126	120899	0.70:1

**निर्वचन:-** वर्ष 2014-15 में यह अनुपात 26 गुना है। यह अनुपात बढ़कर वर्ष 2015-16 में 31 गुना हो गया। वर्ष 2016-17 में यह अनुपात 24 गुना है। यह अनुपात 2017-18 में कम हो गया तथा 17 गुना रह गया। 2018-19 में यह अनुपात पुनः कम हो गया तथा 12 गुना रह गया।

- **विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय:-** विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय दर से निवेशक को यह ज्ञात होता है कि जो पूँजी निवेश किया गया है उस पर प्रत्याय दर क्या होगी। यह एक प्रकार का लाभदायकता अनुपात है। इसे ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है:-

**कर एवं ब्याज से पूर्व लाभ / विनियोजित पूँजी X 100**

**सारणी 7: विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय**

वर्ष	कर एवं ब्याज से पूर्व लाभ	विनियोजित पूँजी	अनुपात(प्रतिशत )
2015-16	31675.87	67408.87	0.47
2016-17	30066	79057	0.38
2017-18	34092	88468	0.38
2018-19	41563	92859	0.45
2019-20	42248	93839	0.45

**निर्वचन:-** वित्तीय वर्ष 2015-16 में यह 0.47 प्रतिशत है, वर्ष 2016-17 एवं 2017-18 में यह अनुपात 0.38 प्रतिशत है तथा 2018-19 एवं 2019-20 में यह अनुपात 0.45 प्रतिशत है।

- **संचालन लाभ अनुपात:-** इस अनुपात से यह ज्ञात होता है कि कंपनी अपनी परियोजना से कितना लाभ अर्जित कर रही है जो कि कंपनी के विस्तार एवं वृद्धि के लिए उपलब्ध रहेगा। इस अनुपात से निवेशक संबंधित उद्योग की कंपनी से लाभ की तुलना कर सकता है। इसे ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है:-

**संचालन लाभ अनुपात / शुद्ध विक्रय x 100**

**सारणी 8: संचालन लाभ अनुपात**

वर्ष	संचालन लाभ	शुद्ध विक्रय	अनुपात(प्रतिशत )
2015-16	31675.87	108646.21	29
2016-17	30066	92693	32
2017-18	34092	123104	28
2018-19	41563	146463	28
2019-20	42248	156949	27

**निर्वचन:-** यह वर्ष 2015-16 में 29 प्रतिशत है वर्ष 2016-17 इसमें वृद्धि हो गयी और यह वर्ष 2016-17 में 32 प्रतिशत हो गया। वित्तीय वर्ष 2017-18 एवं 2018-19 में इस अनुपात में कमी आई तथा 28 प्रतिशत हो गया। अध्ययन अवधि के अंतिम वर्ष में यह अनुपात 27 प्रतिशत है।

- **ब्याज कवरेज अनुपात:-** यह अनुपात हमें यह बताता है कि एक कंपनी उपलब्ध मार्जिन से कितनी बार ब्याज को कवर कर सकती है। इस अनुपात से हमें यह ज्ञात होता है कि कंपनी कितनी आसानी से ब्याज का भुगतान कर सकती है, यह अनुपात जितना अधिक होता है अच्छा माना जाता है। इसे ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है:-

**कर एवं ब्याज से पूर्व लाभ/ब्याज व्यय**

**सारणी 9: ब्याज कवरेज अनुपात**

वर्ष	कर एवं ब्याज से पूर्व लाभ	ब्याज व्यय	अनुपात
2015-16	31695.7	19.83	1598.37:1
2016-17	30082	16	1880.12:1
2017-18	34144	52	656.61:1
2018-19	41761	198	210.91:1
2019-20	43172	924	46.72:1

**निर्वचन:-** वित्तीय वर्ष 2015-16 में यह 1598.37:1 है। वित्तीय वर्ष 2016-17 में यह अनुपात 1880.12:1 है। वर्ष 2017-18 में इस अनुपात में कमी हो गयी तथा 656.61:1 हो गया। वित्तीय वर्ष 2018-19 में इस अनुपात में पुनः कमी आ गयी तथा 210.91:1 हो गया। अध्ययन अवधि के अंतिम वर्ष में यह अनुपात सबसे कम रहा है।

**शोध विषय के अध्ययन की परिकल्पना**

**शून्य परिकल्पना**

H<sub>0</sub> टी.सी.एस. कंपनी की शोधन क्षमता की स्थिति में अध्ययन अवधि के दौरान सार्थक अंतर नहीं अर्थात् एक जैसी है।

r = + 0.98 जो कि कुल सम्पत्तियों एवं कुल बाह्य दायित्व के सम्बन्ध को दर्शाता है।

$$t = \frac{\sqrt{1-r^2}}{.98} \times \sqrt{n-2}$$

$$t = \frac{\sqrt{1-.98^2}}{\sqrt{1-.96}} \times \sqrt{3}$$

$$= \frac{.98 \times 1.73}{\sqrt{1-.96}}$$

$$= \sqrt{0.04}$$

$$= 1.6954$$

$$= \frac{1.6954}{.2}$$

$t = 8.47$

$t$  का परिकल्पित मूल्य 8.47 है, जबकि  $t_{0.05}$  का मूल्य 2.306

स्पष्ट है कि  $t$  की गणना की गई मूल्य का मान 8.47  $t_{0.05}$  की तुलना से अधिक है।

$t > t_{0.05}$  अधिक है।

अतः अध्ययन में ली गई शून्य परिकल्पना अस्वाकार्य है।

अर्थात् ली गयी परिकल्पना सार्थक है। अर्थात् टी.सी.एस. कंपनी की शोधन क्षमता अच्छी है, क्योंकि कंपनी के पास कुल दायित्व की तुलना में सम्पत्तियाँ अधिक हैं जिससे कि कंपनी अपने बाह्य दायित्व का भुगतान आसानी से कर सकती है।

### निष्कर्ष एवं सुझाव

#### • अल्पकालीन शोधन क्षमता

- टी.सी.एस. कंपनी की अल्पकालीन शोधन की स्थिति अच्छी है, क्योंकि अध्ययन अवधि के दौरान चालू अनुपात 2:1 से अधिक रहा है, जो कि कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहा है तथा कंपनी अपने चालू दायित्व का भुगतान आसानी से कर सकती है, क्योंकि चालू सम्पत्तियाँ चालू दायित्व से अधिक हैं।
- तरल अनुपात की स्थिति भी संतोषजनक है, क्योंकि तरल अनुपात सामान्य प्रमाण से अधिक है अर्थात् अध्ययन अवधि के दौरान 1:1 से अधिक पाया गया है यह अनुपात भी कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहा है, क्योंकि कंपनी अपने चालू दायित्व का भुगतान तुरन्त कर सकती है, क्योंकि कंपनी के पास तरल सम्पत्तियाँ चालू दायित्व की तुलना अधिक हैं।
- पूर्ण तरलता अनुपात की स्थिति भी अच्छी है क्योंकि शोध विषय के अध्ययन की अवधि के दौरान यह अनुपात 0.5:1 से अधिक रहा है, अतः यह स्पष्ट है कि कंपनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता की स्थिति बहुत अच्छी है। कंपनी अपने चालू दायित्व का भुगतान आसानी से कर सकती है, क्योंकि चालू सम्पत्तियाँ चालू दायित्व की तुलना में अधिक हैं, जो कि कंपनी के चालू दायित्व का भुगतान करने के लिए पर्याप्त है। यह कंपनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता में वृद्धि कर रहा है, जो कि दिन प्रतिदिन के खर्चों का भुगतान आसानी से कर रही है जिसके फलस्वरूप कंपनी की अल्पकालीन उधार लेने की क्षमता में वृद्धि हो रही है।

#### • दीर्घकालीन शोधन क्षमता

- ऋण समता अनुपात की स्थिति अच्छी है, क्योंकि कंपनी अपने ऋणों का भुगतान आसानी से कर सकती है इसके ऋण समता अंश पूँजी/स्वामित्व कोष से कम है, यह स्थिति ऋणपत्र धारियों के लिए अच्छी है, परंतु कंपनी के लिए यह स्थिति अच्छी नहीं हो सकती, क्योंकि कंपनी कम ऋण लेकर अपना व्यवसाय कर रही है, जबकि कंपनी की प्रत्याय दर अच्छी है, ऐसी स्थिति में कंपनी को अपने ऋण पूँजी में वृद्धि करना चाहिए जिससे कि कंपनी के लाभों में अधिक वृद्धि हो सके।
- कंपनी की शोधन क्षमता अनुपात की स्थिति भी अच्छी है, क्योंकि कुल बाह्य दायित्व कुल सम्पत्तियाँ की तुलना में बहुत कम है, यहाँ कंपनी आसानी अपने बाह्य दायित्व का भुगतान कर सकती है, जो कि कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। कंपनी को भविष्य में भी अपनी शोधन क्षमता में थोड़ी वृद्धि करना चाहिए अर्थात् कंपनी को अपने बाह्य दायित्व की वृद्धि करके अपने व्यवसाय का विस्तार एवं विविधीकरण करना चाहिए जिससे कि कंपनी के लाभों में और वृद्धि हो सके।
- स्वामित्व कोष अनुपात की स्थिति भी अच्छी है, क्योंकि कुल सम्पत्तियों में अधिकांश निवेश लगभग 80 प्रतिशत के माध्यम से किया जा रहा है, जिसका मुख्य कारण कंपनी बाह्य ऋणों के कम से

कम उपयोग कर रही हैं, यह स्थिति भी कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं, लेकिन एक वित्तीय प्रबन्धक की दृष्टि से यह स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती हैं क्योंकि कुल सम्पत्तियों में स्वामित्व कोष से निवेश 70 प्रतिशत के आसपास होना चाहिए। परन्तु अध्ययन अवधि स्वामित्व कोष से निवेश 80 प्रतिशत के आसपास हैं।

कंपनी के संचालन लाभ की स्थिति बहुत अच्छी हैं, क्योंकि कंपनी संचालन लाभ औसत लगभग 29 प्रतिशत हैं। यह स्थिति कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं, जो कि कंपनी के साख, अंश मूल्य तथा शोधन क्षमता में वृद्धि कर रही हैं तथा कंपनी अपने खर्चों पर नियंत्रण कर रही हैं तथा विक्रय में भी निरन्तर वृद्धि हो रही हैं, सभी स्थितियाँ कंपनी पर अच्छा प्रभाव डाल रही हैं, कंपनी को अपनी वर्तमान स्थिति को भविष्य में बनाये रखना चाहिए।

- ब्याज कवरेज अनुपात की स्थिति भी अच्छी हैं, क्योंकि कंपनी आसानी से ऋण पर ब्याज का भुगतान कर सकती हैं, क्योंकि ब्याज की तुलना में संचालन लाभ कई गुना अधिक हैं, यह स्थिति कंपनी पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं, जो कि ऋणदाताओं के लिये सुरक्षित स्थिति हैं, यद्यपि कंपनी में ब्याज एवं ऋण की राशि बहुत कम हैं। कंपनी जोखिम नहीं लेना चाह रही हैं, कंपनी रूढ़िवादी विचारधारा के अनुसार अपना व्यवसाय संचालित कर रही हैं, जो कि वर्तमान स्थिति में संतोषजनक नहीं हैं। कंपनी को थोड़ी जोखिम लेते हुए ऋणों में वृद्धि करना चाहिए जिसका उपयोग व्यवसाय का विस्तार एवं नवाचार तकनीकियों में उपयोग करना चाहिए, क्योंकि कंपनी में संचालन लाभ की स्थिति 29 प्रतिशत हैं, जबकि ब्याज की दर 14 प्रतिशत के आसपास हैं, इस स्थिति का फायदा उठाते हुए अपने ऋणों में विस्तार करना चाहिये।

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची

- ❁ गुप्ता एस.पी. (2009), प्रबंधकीय निर्णयों हेतु लेखांकन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
- ❁ गुप्ता एस.पी. (2011), वित्तीय प्रबन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
- ❁ टी.सी.एस. कंपनी (2015–16 से 2019–20) के वार्षिक प्रतिवेदन।
- ❁ Majumdar, Amalkanti (2017) Improvent of financial solvency of jute industry through material management.

